आपातकाल में सृजन फुलवारी

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-183-1

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र-संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय-15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण-2020, किशोर छिपेश्वर 'सागर'
मूल्य-50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY KISHOR CHHIPESHWR 'SAGAR'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	देखते हैं	6
2.	अंधकार देखते हैं	7
3.	मुश्किल में सफर है	8
4.	आदमी	9
5.	दास्तान तिहाड़ी मजदूर की	10
6.	मोहब्बतों का चलन तो कर लो	11
7.	कि सोए हुए को जगाने लिखूंगा	12
8.	मेरा देश क्या सच मे बदल रहा है ?	13
9.	सच कहने की हिम्मत रखना	14
10.	सियासी पैतरे चलाने पर तूल गए	15
11.	खजाना आ गया	16
12.	बचपन में	17
13.	रखना है	18
14.	वो नजदीक मेरे आने लगे हैं	19
15.	हाले दिल हमसे छुपाते बहुत हो	20
16.	मेरी दुआएं है	21

देखते हैं

आओं मोहब्ब्त लुटाकर देखते है
दुनियां को फिर झुकाकर देखते हैं

जियो तो जिन्दा दिली से जियो यारों
क्यों न हो कि, सर उठाकर देखते हैं

तहजीब इंसानियत भी कायम रहें
मुफ़लिस को सीने से लगाकर देखते हैं

लड़ाई झगड़े सब छोड़ क्यों नहीं देते
क्यों न रोते हुए को हँसाकर देखते हैं

गम के अंधेरे छट जाएंगे वादा करें
उम्मीद का दीपक जलाकर देखते हैं

अंधकार देखते हैं

आँखों में आँसुओं की धार देखते हैं
आदमी को बेबस, लाचार देखतें हैं

कैद होकर रह गया चारदीवारी में
उजड़ा हुआ अब तो बाजार देखते हैं

कैसा है कुदरत का कहर देखो यारों
बन्द पड़ा सारा कारोबार देखते हैं

वीरान है गांव शहर और जहां सारा
उजड़ी बस्ती खोई हुई बहार देखते है

रोशनी छीन गई उजाले दूर हुए
होता हुआ अब तो अंधकार देखते हैं

मुश्किल में सफर है

सुनसान है सड़क सुनसान शहर है
देख लो भाई मेरे कोरोना का कहर है

परिवार संग बिता रहे है आज का ये दिन
मोबाइल हाथ पर और टीवी पे नज़र है

बच्चो संग मस्ती बचपन याद आ गया
जिंदगी हमारी कुछ इस तरह बसर है

खिलवाड़ क्यों कर रहा आदमी प्रकृति से
मैं सोच रहा हूँ बट रहा क्यों ये जहर है

कहना मेरा मान लो अपना लो शाकाहार
ये जिंदगी का अब मुश्किल में सफर है

आदमी

दर्द से तिलमिलाता है आदमी
हांथ कहां मिलाता है आदमी

बढ़ रही भला क्यों इतनी नफ़रतें
जहर एकदूजे को पिलाता है आदमी

वक्त की मार से इंसान है डरा हुआ
नज़र क्यों नहीं मिलाता है आदमी

तड़प रहा भूख से चैनो अमन छीन गया
दो निवाले प्यार से क्यों नहीं खिलाता है आदमी

आदमी ही आदमी का तमाशा बन गया
दूर से अब सिर्फ हाथ हिलाता है आदमी

दास्तान तिहाड़ी मजदूर की

दर्द है तो फिर मुस्कुरायेंगे कैसे
कहानी अपनी छूपाएँगे कैसे

मीलों चल रहे घर की तलाश में
वो अपने वतन को भुलायेंगे कैसे

चिंता बेशक भला कैसी न रहेगी
दो वक्त की रोटी गरीब लाएंगे कैसे

अरमान बिखरे सपने सब चूर हुए
ख्वाब भला वो अब सजायेंगे कैसे

दास्तान है ये दिहाड़ी मजदूर की
खोई हुई खुशियां अब पाएंगे कैसे

गम का पहाड़ ही तो टूट पड़ा है
खुद को भला वो हसाएंगे कैसे

मोहब्बतों का चलन तो कर लो

नफरतों से मुंह तो मोड़ो
मोहब्बतों का चलन तो कर लो

छोड़ो ये सारे लड़ाई झगड़े
अमन का तुम वतन तो कर लो

कि भाई भाई गले लगालो
कुछ ऐसा यारो जतन तो कर लो

मिला ही क्या है वो लड़ने वालों
खुशी से धरती गगन तो कर लो

कि दिल से दिल तुम मिला के देखो
कुछ ऐसी यारो लगन तो कर लो

कि गैर तुम क्यों समझ रहे हो
जरा सा अपनापन तो कर लो

कि सोए हुए को जगाने लिखूंगा

कि सोए हुए को जगाने लिखूंगा
हकीकत सभी को बताने लिखूंगा

कलमकार हूँ मैं यही काम अपना
कि रोते हुए को हँसाने लिखूंगा

खिलाफत भले ये जमाना करे पर
दबी हर जुबां को उठाने लिखूंगा

हमें चापलूसी न आई कभी भी
सभी दुश्मनों को ठिकाने लिखूंगा

तिरंगा हमारा लहरता रहे बस
इसी पर सदा सर झुकाने लिखूंगा

मेरा देश क्या सच मे बदल रहा है ?

आँखों मे फिर आँसू, क्या चल रहा है
नफरतों की आग में शहर जल रहा है

इंसान मर गए है,आदमी है जिंदा
सियासत का कैसा तमासा चल रहा है

क्या खूब कह गया वो कहने वाला
मेरा देश क्या सच मे बदल रहा है

अमीरों की बस्ती में जाकर तो देखो
दौलतमंद गरीबों को मसल रहा है

हादसों का चलन कम होता नहीं है
देखकर ये आलम दिल दहल रहा है

लोग भी दर्द अब समझते नही क्यों
पत्थर बना आदमी क्यों नही पिघल रहा है

सच कहने की हिम्मत रखना

सच कहने की हिम्मत रखना
भेद किसी से तुम मत रखना

तुम्हे चाहने वाले होंगे जहाँ में
सच्चे दिल से चाहत रखना

एकता का है हिंदुस्तान प्यारा
तुम न किसी से अदावत रखना

वसूल और ईमान जिंदा रहे सदा
नेक राह चलने की आदत रखना

अल्लाह ईश्वर गॉड सब एक नाम
नजरे करम जरा इनायत रखना

सियासी पैतरे चलाने पर तूल गए

हिंदू मुसलमान बनाने पर तूल गए
आपसी में लड़ाने पर तूल गए

फिजा में घुल रही नफरत की हवा
सियासी पैतरे चलाने पर तूल गए

हैवान जिंदा और इंसान मरे हुए
शहर को देखो जलाने पर तूल गए

दिख रहा है चहुओर उठता हुआ धुँआ
आग शहर में क्यों लगाने पर तूल गए

हम सब एक है कहने को रह गया
जाति के नाम दंगे बढ़ाने पर तूल गए

क्या मिट जाएगा मोहब्ब्त का चलन
एकदूजे को आपस मे भिड़ाने पर तूल गए

खजाना आ गया

तुम्हे दिल मे बसाना आ गया
दोस्ती दिल से निभाना आ गया

तुझमे देखी है मैंने ऐसी अदा
सजदे में सर झुकाना आ गया

पहले सा मेरा अब भी किरदार है
लोग कहते है नया जमाना आ गया

बात ही बात में जिक्र करता रहा
मेरे लबों को मुस्काना आ गया

तेरी पायल की छम जुल्फ लहरा गई
यूं लगा है मौसम सुहाना आ गया

सच कहता हूं जबसें मिले हो मुझे"सागर"
हाथ लगता है मेरे खजाना आ गया

बचपन में

खुशियों का देखा खुमार बचपन में
आपस मे है कितना प्यार बचपन में

बच्चे-बच्चे मोहब्बत कितनी लुटाते है
लगा खुशियों का अम्बार बचपन में

कभी कट्टी कभी मिठ्ठी होती रहती
साथी पर है ऐतबार बचपन में

याद आते है वो स्कूल वाले दिन
होता नहीं कोई लाचार बचपन में

खेले खो-खो गिल्ली डंडा और कंचे
महके गुलशन गुलजार बचपन में

भौरे तितली धरती गगन सुहाते हैं
देखे खुशियों के रंग हजार बचपन में

रखना है

दिल में कोई अरमान रखना है,
हो दर्द भी तो मुस्कान रखना है ।

मर जाएंगे अपने वतन के लिए ।
हिन्दोस्तां की मगर शान रखना है ।।

धर्म अपना रहे, सदा इंसानियत ।
इक अपनी अलग पहचान रखना है ।।

माँ से मिला हमे यही संस्कार है ।
बड़ो का बुजुर्गों का सम्मान रखना है ।।

चलेंगे सदा हम, अमन के रास्ते ।
कदम के ऐसे निशान रखना है ।।

वो नजदीक मेरे आने लगे हैं

दूरियां इस कदर मिटाने लगे हैं
वो नजदीक मेरे आने लगे हैं

बन्द आँखों से भी नजर आते हैं
इस कदर दिल मे समाने लगे हैं

रूठ सकते नहीं एक पल के लिए
रूठ जाऊं तो फिर मनाने लगे हैं

रंगीनियां और मस्ती का आलम
ख्वाब आँखों में सजाने लगे हैं

मेरे अपने हुए, नहीं वो अजनबी
हाले दिल अपना बताने लगे हैं

जिंदगी भी तो मेरी मुस्कुराने लगी
अपनापन जबसे जताने लगे हैं

हाले दिल हमसे छुपाते बहुत हो

अदाएं तुम्हारी मुस्कुराते बहुत हो,
हाले दिल हमसे छुपाते बहुत हो!

अगर है मोहब्बत तो इकरार करना!
हमे तुम सनम आजमाते बहुत हो!!

लुभाती है सादगी और बातें तुम्हारी!
अकेले में तुम इतराते बहुत हो!!

अदा शोख चंचल.....भाने लगी है!
कोई नगमा शायरी गुनगुनाते बहुत हो!!

शामो शहर तुमने..... सोचा मुझी को!
ख्यालों में अपने मुझको लाते बहुत हो!!

तुम्हे क्या बताऊँ तुम मेरी जिंदगी हो!
मेरी साँस धड़कन में समाते बहुत हो!!

मेरी दुआएं है

चाहत के पुजारी है अदावत नहीं करते
कहना मान लेते है शिकायत नहीं करते

रखोगे याद क्या मेरी सादगी को तुम
तुम्हारे फैसले मंजूर, बगावत नहीं करते

तुम ही सोचो भला कैसे रुठ जाएंगे हम
मेरी जान ही तो हो, हिमाकत नहीं करते

तुम्हारी मर्यादा का भी ख्याल रखा है
चाहकर भी कोई हम शरारत नहीं करते

मेरी दुआएं है तुम सदा मुस्कुराती रहना
ऐसा नहीं कि हम, इबादत नहीं करते

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

वार्ड नं.०२, भटेरा चौकी
बालाघाट (म.प्र.)

Email- kchhipeshwar@gmail.com
Mobile - 9584317447

जैसा कि सब जानते हमारा देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है। और इस महामारी से निपटने के लिए हर सम्भव प्रयास किये जा रहे है। सभी को अपने घरों में अपने परिवार के साथ ही रहना पड़ रहा है। इस मुश्किल घड़ी में सृजन ही वो कार्य है जो घर बैठे किया भी जा सकता है और रचनाओं के माध्यम से एक कवि एक लेखक अपने विचार जन जन तक पहुँचा सकता है। जो लोगो को जोड़ने में उनका उत्साह वर्धन करने में सहायक होगा।

मैंने महसूस किया है आपातकाल में सृजन निराशा से दूर रखता है। हमे घबराने की जरूरत नहीं है बस कुछ सावधानियां बरतना जरूरी है, जैसे, मास्क लगाना, साबुन से बार-बार हाथ धोना, सेनिटाइजर लगाना, शारीरिक दूरी बनाए रखना, अनावश्यक घर से बाहर न निकलना, तो कोरोना हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं पायेगा और कोरोना को भागना ही पड़ेगा । बस इस समय जरूरत है चिंतन की सृजनात्मक कार्य की। बेशक आपातकाल में सृजन निराशा से दूर रखता है।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-183-1

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/